707

drishti | दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

टेस्ट-11
(प्रश्न पत्र-I)

DTVF / OPT-24 **HL-2411**

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक* : 250 *Maximum Marks* : 250

नाम (Name): Payal Gwalwanshi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 30 Augt 2024 , (II)

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]:

0	8	2	2	5	9	1

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______________ **टिप्पणी** (Remarks): ______________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

drishti | दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

drishti | दृष्टि The Vision

खण्ड - क

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) सिद्ध-साहित्य में खड़ी बोली का प्रारंभिक स्वरूप

सिद्ध साहित्य का प्रारंभ मुख्यत: आदिकाल में हुआ था। इस समय मुख्यत: अर्धमागधी अपभ्रंश का प्रयोग साहित्य रचना में किया गया।

मुख्य कवि - कण्हपा, सरहपा, डोम्भिपा, लुईपा

खड़ी बोली का प्रारंभिक स्वरूप

1) न के स्थान पर ण का प्रयोग

पडिउ सअल सत्य बखाणह
देहहिं बुद्ध बसंत न जाणह

आनुनासिक का प्रयोग

जाहि मन पवन ~~न~~ संचरई, रवि ससि णाह पवेस
ताहि मन विसाम करु, सहरा कहै उवेस

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(२) विभक्ति के रूप में 'हि' का सभी कारकों में प्रयोग

उदा० देहहिं बुद्ध बसंत न जाणह

सिद्ध साहित्य की अन्य विशेषताएँ

(1) धार्मिक मान्यताओं का शुष्क प्रचार

(२) मुक्तकों जैसे - चर्यापदों का प्रयोग

(3) शिल्प पर अधिक ध्यान नहीं

(4) भक्ति हेतु प्रवृत्ति मार्ग का प्रयोग योग की पंचमकार पद्धति को महत्व

(5) भाषा - संधा भाषा

इस प्रकार बौद्ध धर्म की वज्रयानी शाखा के सिद्ध साहित्य में खड़ी बोली की कुछ विशेषताएँ दिखाई देती हैं।

(ख) 'बुंदेली' बोली

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

बुंदेली बोली का प्रयोग मुख्यत: मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश और महाराष्ट्र में किया जाता है। मध्यप्रदेश के टीकमगढ़, जबलपुर, बालाघाट, झांसी आदि में वहीं उत्तरप्रदेश के आगरा, मैनपुरी में और महाराष्ट्र के नागपुर में भी प्रयोग किया जाता है।

शौरसेनी अपभ्रंश
↓
पश्चिमी हिन्दी
↓
बुंदेली — मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र में

बुंदेली की विशेषताएं

(1) ऐ और औ का प्रयोग, सरल रूप में ही
उदा० बैल, औरत

(2) ध्वनियों के उच्चारण में अंतर
जैसे - व → ब (वचन → बचन)
स → छ (सीढ़ियाँ → छीड़िया)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

ड़ → र (झगड़ा → झगरा)
श → स (शौच → सौच)

(3) ह ध्वनि का लोप
उदा० चाहत → चाउत

(4) परसर्गों में भी भिन्नता
जैसे- सम्प्रदान - के लाने
कर्म - खों
संबंध - खो

(5) क्रिया के ह रूप का प्रयोग नहीं
उदा० हूँ - औं
है - आय

(6) भविष्यकाल के लिये - ह, न रूप
वर्तमान काल के लिये - त रूप (ता ते, ती)

(7) स्त्रीलिंग बनाने हेतु, इन, इनी प्रत्यय
उदा० लड़का → लड़किन
शेर → शेरनी

इस प्रकार बुंदेली बोली के महत साहित्य की भी रचना की गई वर्तमान में भी बड़े क्षेत्र में बोली जाती है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) पहाड़ी हिन्दी

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

पहाड़ी हिन्दी का प्रयोग मुख्यतः उत्तराखण्ड और हिमाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी राज्यों में किया जाता है।

खस अपभ्रंश
⇓
पहाड़ी हिन्दी
⇓

गढ़वाली	कुमाऊनी
⇓	⇓
टिहरी, पौड़ी में प्रयोग	नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़ आदि में प्रयोग

सामान्य विशेषताएँ

(1) सानुनासिक स्वरों की प्रधानता
(2) ओकारान्तता जैसे- घोड़ो
(3) बहुवचन हेतु ओ, न, ऊँ रूपों का प्रयोग
उदा० घोड़ो, घोड़न, घोड़ूँ आदि
(4) भविष्यकाल हेतु ल रूप
उदा० चलला
(5) भूतकाल हेतु यो रूप - चल्यो, खायो

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

गढ़वाली
~~कुमाऊनी~~ - पंजाबी और राजस्थानी बोलियों का भी प्रभाव

1) स्वरों के अनुनासिकीकरण की प्रवृत्ति
~~जैसे~~ - छायाँ, रातों

2) कारक व्यवस्था के लक्षण
कर्ता (न, ल रू)
कर्म (कूँ, कुँणी)
करण (सें, ती परसर्ग

2) कुमाँऊनी - राजस्थानी बोलियों का प्रभाव
इसलिये ल के स्थान पर ळ का प्रयोग
उदा० - बालक → बाळक
- कौरवी के समान महाप्राण व्यंजनो का अल्पप्राणीकरण
उदा० हाथ → हात
- ण का प्रयोग अधिक (पानी → पाणी)
- सहायक क्रिया हेतु छ रूप

इस प्रकार पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण प्रयोक्ता वर्ग कम है परन्तु फिर भी पहाड़ी हिन्दी मे कई साहित्य लिखे गये है)

(घ) रहीम के साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

रहीम का बचपन का रहीम खानेखाना था। मुगल वंश मे मुस्लिम कवि होते हुए भी कृष्णभक्ति का रास्ता अपनाया।

रहीम के साहित्य मे उर्दू के साथ ही ब्रजभाषा और खड़ी बोली का भी प्रयोग किया गया है।

रहीम के साहित्य मे खड़ी बोली का प्रारंभिक स्वरूप

- रहीम द्वारा अपनी भक्तिगीतो मे खड़ी बोली का प्रयोग

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े तो गांठ पड़ि जाए

- रहीम द्वारा नीतिपरक काव्यो में भी खड़ी बोली

रहीमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून
पानी गए न उभरे, मोती मानस चून।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

रहीम द्वारा खड़ी बोली का प्रयोग शुद्ध रूप से मदनाष्टक में किया गया है। जहाँ पहली बार खड़ी बोली का प्रयोग किया गया।

इसके साथ ही रहीम द्वारा बरवै नायिका भेद में भी खड़ी बोली और अवधी का प्रयोग किया गया।

- वही दोहावली में ब्रजभाषा का प्रयोग

रहीमन ओछे नरन सो बैर भली न प्रीत
काटे चाटे स्वान से दुहूँ भांति विपरित

इस प्रकार रहीम का मदनाष्टक रचना में खड़ी-बोली का व्याकरणिक रूप स्पष्ट दिखाई देता है।

(ङ) केलॉग का हिन्दी व्याकरण-ग्रंथ

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

2. (क) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में 'अवधी' के विकास में सूफी काव्यधारा के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ख) हिन्दी में अनूदित लेखन पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) सर्वनाम और उसके भेदों पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

3. (क) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में गैर हिन्दीभाषी राज्यों के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में हिन्दी राज्यों के साथ ही गैर हिन्दीभाषी राज्यों के स्वाधीनता आंदोलन के महान नेताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

ऐसे राज्य जहाँ हिन्दी का प्रयोग न तो बोलने और न ही लिखने के लिये होता है, इन्हें गैर हिन्दीभाषी राज्य कहते है।

जैसे- आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु

आंध्रप्रदेश

(1) आंध्रप्रदेश में प्रारंभिक प्रयास महान नेता नाट्याचार्य लक्ष्मणस्वामी द्वारा किया गया।

(2) 1918 में इन्दौर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता महात्मा गांधी द्वारा की गई थी

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

जिसमें दक्षिणी राज्यों में हिन्दी के प्रचार का कार्य देवदास गांधी को दिया गया।

- आंध्रप्रदेश के युवक हिन्दी सीखने उत्तरराज्य गये और वापस आकर हिन्दी का प्रचार प्रसार किया
- 1920 में नेल्लूर में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा का गठन।
- राजमहेन्द्रवरम शहर में हिन्दी प्रचारक विद्यालय की स्थापना की गई
- पट्टाभि सीतारमैय्या द्वारा महत्वपूर्ण योगदान दिया गया।

तमिलनाडु - दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास का गठन गांधीजी द्वारा किया गया

- तिरुचिरापल्ली को हिन्दी प्रचार का मुख्य केन्द्र बनाया गया

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

ई.वी.रामास्वामी, नायिक्कर द्वारा हिन्दी के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया गया।

- स्कूलों, महाविद्यालयों में हिन्दी सीखने हेतु प्रेरित किया गया।
- 1932 में हिन्दी प्रेमी मण्डल की स्थापना की गई

केरल

- 1922 में हिन्दी सार्वजनिक प्रचार का कार्य प्रारंभ किया गया।
- शकरानंद, के.वी.नायर की प्रमुख भूमिका
- दामोदरन उण्णी प्रथम हिन्दी प्रचारक बने जिन्होंने केरल में हिन्दी प्रचार-प्रसार का काम किया।
- केरल के स्कूलों, महाविद्यालयों में हिन्दी को शामिल किया गया।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

कर्नाटक

1) 1923 में काकीनाड़ा में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन का आयोजन किया गया।

(2) सन 1924 में बेलगांव के कांग्रेस अधिवेशन में हिन्दुस्तानी सेवादल के शिविरों में हिन्दी पढ़ाने का प्रबंध किया गया।

(3) 1930 में मैसूर रियासत हिन्दी समिति का गठन किया गया

(4) मंगलूर, हुबली, बेंगलूर, बेलगांव में हिन्दी प्रचार केन्द्रों की स्थापना की गई।

इस प्रकार स्वाधीनता आंदोलन के नेताओं द्वारा हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने हेतु गैर-हिन्दी भाषी राज्यों को भी प्रोत्साहित किया गया।

(ख) बिहारी हिंदी की बोलियों का परिचय दीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

बिहारी हिन्दी का प्रयोग मुख्यतः बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल के कुछ क्षेत्रों में किया जाता है।

मागधी अपभ्रंश
↓
↓
बिहारी हिन्दी

मैथिली | मगही | अंगिका | भोजपुरी

(1) भोजपुरी - मुख्यतः छपरा, चंपारण, रांची में प्रयोग

- ण का प्रयोग नही, न का प्रयोग (प्रान)
- ड़ के स्थान पर र का प्रयोग

उदा० थोड़ा → थोरा
सड़क → सरक

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

- स, श के स्थान पर ह का प्रयोग

उदा० निश्चय → निह्चय

- संध्यक्षर का प्रयोग

ऐ – अइ - (ऐसा → एइसा)

औ – अव (औरत → अवरत)

- संज्ञा के तीन रूपों का प्रयोग

घोड़ा, घोड़वा, घोड़वना

- एकवचन से बहुवचन बनाने हेतु लोगन, जन जैसे शब्दों का प्रयोग

- वर्तमानकाल हेतु त रूप (चलत, खात)

- भूतकाल हेतु ल रूप (देखल)

- भविष्यकाल हेतु ब रूप (होइब)

<u>मगही बोली</u> - पटना, गया में प्रयोग

- बहुवचन का प्रयोग एकवचन में

उदा० हम, आप

-

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मैथिली - दरभंगा, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया, भागलपुर
- आठवीं अनुसूची में शामिल
- सभी शब्द स्वरांत हो गये
उदा० - महान - महा
- क्रियाओं में छ व ल रूप का अधिक प्रयोग
उदा० सहायक क्रिया हेतु छ रूप (छौं, छूँ)
वर्तमान क्रिया हेतु त रूप (चलत)
भूतकाल हेतु - ल रूप (भेल)
भविष्यकाल हेतु ब रूप (जाइब)

इस प्रकार बिहारी हिन्दी में मैथिली की साहित्यिक महत्ता के कारण इसे आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया वहीं भोजपुरी का प्रयोग फिजी, त्रिनीदाद, मारीशस आदि देशों में भी किया जाता है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) हिंदी गद्य के विकास में ईसाई मिशनरियों की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

आधुनिक काल में हिन्दी गद्य का विकास तीव्र गति से हुआ। इसके विकास के पीछे कोई एक कारण नहीं है अपितु कई कारण है।

जैसे-

- स्वतंत्रता से मोहभंग और पद्य के स्थान पर गद्य के तहत उपन्यास का महत्व बढ़ा
- ब्रजभाषा और अवधी जैसी काव्यात्मक भाषा के स्थान पर खड़ी बोली का विकास
- ब्रिटिशशासन के तहत प्रशासन के कार्य हेतु खड़ी बोली को मान्यता
- ईसाई मिशनरियों द्वारा धर्म के प्रचार प्रसार में

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

हिन्दी गद्य के विकास में ईसाई मिशनरियों की भूमिका –

(1) ईसाई मिशनरियों द्वारा हिन्दी गद्य के माध्यम से बाइबिल का अनुवाद कर अपनी धार्मिक शिक्षा का प्रचार हिन्दी जनमानस में करना प्राथमिक उद्देश्य था।

(2) टॉमस कोलब्रुक द्वारा बाइबिल का हिन्दी में अनुवाद करवाया गया और भारत के विभिन्न भागों में प्रचार प्रसार किया गया।

(3) हैरियर मार्टिन द्वारा न्यूटेस्टामेण्ट का का हिन्दी में अनुवाद कर इसका प्रसार किया गया।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(4) विलियम कैरे द्वारा बाइबिल का पाँच खण्डों में अनुवाद कर, उसे गद्य रूप में प्रसारित किया गया।

(5) ईसाई मिशनरियों द्वारा प्रेस के विकास के कारण गद्य का प्रसारण का कार्य सरल रहा।

(6) इन्होंने खड़ी बोली और देवनागरी लिपि को गद्य के विकास का आधार बनाया।

इस प्रकार ईसाई मिशनरियों हिन्दी गद्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया और पद्य के संसार से गद्य की ओर की यात्रा में सहायता की गई।

drishti | दृष्टि The Vision

4. (क) मध्यकाल में प्रयुक्त साहित्यिक ब्रजभाषा में निहित गंभीर कलात्मकता के कारणों का अन्वेषण कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मध्यकाल को भक्तिकाल के रूप में जाना जाता है। इस काल में जहाँ रामभक्तिकाव्यधारा में अवधी का प्रयोग किया गया वहीं दूसरी ओर कृष्णभक्तिधारा के अंतर्गत ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया।

ब्रजभाषा के प्रयोग का कारण

(1) अवधी मुख्यत: गंभीर विषयों पर आधारित जिसमें औदात्य, अनुशासन को अधिक महत्व

(2) अवधी में मुक्तकों की रचना करना जटिल

(3) श्रृंगार के संयोग, वात्सल्य आदि विषयों के प्रस्तुतीकरण हेतु ब्रजभाषा में चंचलता, समाहारता उपस्थित था।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

ब्रजभाषा में निहित कलात्मकता के कारण

(1) भक्तिकाल और रीतिकाल में मुगलशासन के तहत राज्यों की अधीनता, युद्धों का अभाव, दरबारी शासन आदि घटनाओं ने समाज में कला को महत्व दिया

(2) भौगोलिक कारणों में यमुना का तट, वृंदावन, मथुरा जैसे नगर, कला के केन्द्र

(3) सांस्कृतिक कारणों में कृष्ण के मिथक आधारित कथाएँ, आर्थिक वंचन का अभाव, त्यौहार और उत्सवधर्मी संस्कृति

(4) साहित्यिक कारणों में सूरदास, को वल्लभाचार्य द्वारा सख्य, दास्य के स्थान पर श्रृंगार भक्ति का ज्ञान दिया गया

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सूर है के काहे घिघियात हो

(1) रीतिकाल में दरबारी माहौल, श्रृंगार पक्ष की मांग, युद्ध का अभाव, राजा की मान प्राप्ति की इच्छा

(6) ऐतिहासिक कारणों में कृष्ण की कलाओं का वर्णन, लोकपक्ष को अधिक महत्व, मंदिरों में वास करना और भक्ति गीत गाना

7) ब्रजभाषा में समाहारशमता में कम शब्दों को कलात्मक ढंग से कह देना

कहत नटत रिझत खिझत मिलत खिलत लजियात
भरे भौन में करत है, नैनन ही सो बात

8) दरबारी माहौल में श्रृंगार पक्ष का आधार

बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय
सौंह करै भौंहनि हँसै, दैन कहै नट जाय

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

i) वात्सल्य का सुंदर वर्णन

सोभित कर नवनीत लिए,
घुटरूनि चलत रेनु तन मंडित

ii) भाषायी लचीलापन अतः ब्रजभाषा में कलात्मकता के प्रेषण हेतु अन्य भाषा के शब्दों को शामिल किया गया

उदा० जेहि, तेही – अवधी शब्द
आपन, गोंड, हमार – पूर्वी शब्द
महंगी – पंजाबी शब्द

iii) उत्प्रेक्षा और उपमा अलंकारों का प्रयोग

शुक्ल – "सूर को अलंकार की झक सी चढ़ जाती है इसलिये वे उपमा में उपमा और उत्प्रेक्षा में उत्प्रेक्षा का प्रयोग करते हैं।

इन्हीं कारणों ने ब्रजभाषा को अखिल भारतीय काव्यभाषा बनने में भी सहायता की।

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) उन्नीसवीं सदी में खड़ी बोली हिंदी के विकास में सामाजिक सुधार आन्दोलनों की भूमिका पर प्रकाश डालिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

19 वीं सदी मे खड़ी बोली ने ब्रजभाषा को विस्थापित कर गद्य और पद्य मे साहित्य रचना का माध्यम बनी।

खड़ी बोली के विकास मे अनेक कारणों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। जैसे -

- ब्रिटिश शासन की स्थापना
- फोर्टविलियम कॉलेज की स्थापना
- इसाई मिशनरियों द्वारा प्रचार प्रसार
- प्रेस का विकास
- स्वाधीनता आंदोलन
- पत्र-पत्रिकाओं का संपादन
- सामाजिक सुधार आन्दोलन

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

खड़ी बोली हिन्दी के विकास में सामाजिक सुधार आंदोलनों की भूमिका

(1) आर्य समाज के संस्थापक दयानंद सरस्वती का सत्यार्थ प्रकाश में खड़ी बोली का प्रयोग

(2) ब्रह्म समाज के संस्थापक राजाराम मोहन राय द्वारा संवाद कौमुदी, 1815 में वेदांतसूत्र पत्र और 1829 में बंगदूत अखबार के माध्यम से खड़ी-बोली हिन्दी का प्रयोग और प्रचार-प्रसार

drishti | दृष्टि The Vision

(3) श्रद्धाराम फिल्लौरी द्वारा ओहम् जय जगदीश आरती की रचना भी खड़ी बोली में की गई।

(4) एनीबेसेण्ट द्वारा थियोसोफिकल सोसायटी के प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी की खड़ी-बोली का प्रयोग

(5) केशवचन्द्र सेन, ईश्वरचंद्र विद्यासागर जैसे महान समाजसुधारकों द्वारा खड़ी-बोली को प्रसारित किया गया।

इस प्रकार सामाजिक सुधार आंदोलनों ने समाज सुधार के साथ हिन्दी की खड़ी बोली के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ग) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु सुझाव दीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

भारतीय संविधान में अनुच्छेद-343 के तहत देवनागरी लिपि को भारत की एकमात्र राष्ट्रलिपि का दर्जा प्राप्त है।

वर्तमान में भी व्याकरणिक स्तर पर कुछ कमियों के कारण इसमें सुधार अपेक्षित है।

देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु सुझाव

(1) ध्वनियों एवं उनके संकेत संबंधी

- प्रत्येक स्वनिम के स्वतंत्र संकेत हो
- ऋ, रु, जैसी जटिल ध्वनियों को हटा देना
- ञ, ङ के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग
- ज़, फ़, ख़ जैसी नुक्तायुक्त ध्वनियों का प्रयोग

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

- अन्य भाषा की ध्वनियों को भी देवनागरी में शामिल करना

(२) अनुस्वार और आनुनासिक के प्रयोग संबंधी

- व्यंजन संयोग अपने ही वर्ग के व्यंजन के साथ

उदा०- सम्बन्ध → संबंध

- परन्तु अन्य वर्ग के व्यंजन होने पर पंचमाक्षर का ही प्रयोग

उदा० उन्मत्त

- आनुनासिक में चन्द्रबिंदु का प्रयोग आवश्यक

उदा०- धाँया, हँसा

- परन्तु मात्रा लग जाने पर केवल बिंदु का प्रयोग

उदा०- बनखें

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संयुक्त व्यंजन संबंधी

1) क्ष, त्र, ज्ञ का प्रयोग यथावत बना रहे

2) अर्द्धव्यंजन का प्रयोग वर्तमान में जैसा है वैसा ही

उदा० खड़ी पाई हटा देना

प्रारब्ध

3) रेफ को ऊपर लगाना और र वर्ग में नीचे लगाना

उदा० ट्रक, निवर्ति

4) क, फ के संयुक्त हटा देना

काफ्का

इस प्रकार इन अतिरिक्त सुझावों के माध्यम से देवनागरी लिपि के मानक रूप को और परिवर्तित किया जा सकता है।

drishti | दृष्टि The Vision

खण्ड - ख

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) केशव: कठिन काव्य के प्रेत

केशव मध्यप्रदेश राज्य से संबंधित रीतिकालीन कवि है। जिन्होंने रीतिकाल की लक्षणग्रंथ परम्परा का प्रयोग कर आचार्यत्व की उपाधि धारण की।

केशव: कठिन काव्य का प्रेत

कारण

1) केशव द्वारा अपने काव्य में संस्कृतनिष्ठ तत्समी शब्दों का अधिक प्रयोग

2) केशवदास ने अपने काव्य में पदन्यूनता, सूत्र शैली का प्रयोग अर्थबोधन में जटिलता उत्पन्न करता है।

उदा० सी। धी। री। धी

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

3) वाक्य न्यूनता भी अर्थबोधन में जटिल

4) ~~का~~विन्ध योजना भी जटिल, कथानक में महत्वपूर्ण प्रसंगों का कम महत्व

उदा० - रामचन्द्रिका में राम वनागमन प्रसंग का कम महत्व

5) छन्द योजना भी जटिल

6) संस्कृत भाषा को अधिक महत्व इसलिए आमजनमानस से कटी हुई।

7) अलंकार का ~~कम~~ महत्व अधिक दिया।

8) मानु! कहाँ गये नृपताल, सुरलोक गये, सुतशोकाहि।

9) भावग्रहण हेतु कठिन शब्द - मारन्कर, उगान, गलसुई

इन्ही कारणों से केशवदास को कठिन काव्य का प्रेत कहा जाता है क्योंकि इनके काव्य आमजनमानस के साथ संबंध स्थापित करने में असफल रहे।

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) नाटककार रामकुमार वर्मा

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

नाटककार रामकुमार वर्मा हिन्दी साहित्य के महान नाटककार है साथ ही इनके द्वारा एकांकी लेखन में महत्वपूर्ण योगदान दिया गया इसलिये इन्हे एकांकी का जनक और सम्राटकार माना जाता है।

प्रमुख एकांकिया

1) पृथ्वीराज की आँखे
2) रेशमी टाई
3) कौमुदी महोत्सव
4) दीपदान

नाटककार रामकुमार वर्मा के प्रमुख नाटक –

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

विशेषताएँ

(1) इनके द्वारा मुख्यतः ऐतिहासिक नाटक लिखे गए। जिसमें इतिहास का प्रयोग उपयोगितावादी नजरिये से किया गया।

(2) नाटक लेखन, रंगमंच की माँग के अनुसार न कि आधिक ज्यटिल

(3) नाटक, एकांकी के साथ कहानी विधा में भी महत्वपूर्ण योगदान
उदा० - चेरी के पेड़
नीलकमल का पलायन

इस प्रकार रामकुमार वर्मा द्वारा हिन्दी साहित्य की नाटक विधा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया गया

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) 'अंधायुग' नाटक का महत्त्व।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

अंधायुग नाटक हिन्दी साहित्य के महान नाटककार धर्मवीर भारती का नाटक है। इसका कथानक महाभारत युद्ध के अंतिम दिन पर आधारित है। इसमें युद्ध और उसके बाद की समस्याओं और मानवीय महत्वाकांक्षाओं को प्रस्तुत किया गया है।

अंधायुग नाटक का महत्व

(1) महत्वपूर्ण ऐतिहासिक नाटक है जिसमें महाभारत के युद्ध का मूल्यांकन किया गया है।

(2) कथानक महाभारत के अठारहवें दिन से लेकर श्रीकृष्ण की मृत्यु तक के क्षण पर आधारित है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(3) इस नाटक में नाटक के सभी महत्वपूर्ण तत्वों का पर्याप्त ध्यान रखा गया

(4) पर्याप्त रंगसंकेत, ध्वनि संकेत, आदि के कारण रंगमंचीयता आसान और सरल

(5) पात्रों और दृश्यों की संख्या उचित है।

(6) संवाद योजना नाटक को और अधिक सुदृढ़ बनाती है।

(7) इस नाटक में युद्ध की निरर्थकता को दर्शाया गया है।

इस प्रकार धर्मवीर भारती का यह नाटक युद्ध की समस्या पर आधारित है जो आज भी प्रासंगिक है।

drishti | दृष्टि The Vision

(घ) निराला की कविता 'तुलसीदास' का 'प्रतिपाद्य'

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा मुख्यत: प्रगीतो का लेखन किया गया उनकी कविताओं मे विषय वैविध्य पर्याप्त मात्रा मे दिखाई देता है। साथ ही मुक्त छंदो का प्रयोग कर नई परम्परा का निर्माण किया गया।

प्रमुख काव्य - सरोजस्मृति, जूही की कली, राम की शक्तिपूजा, आराधना, वह तोड़ती पत्थर, भिखारी

तुलसीदास का प्रतिपाद्य

(1) इस कविता मे निराला भारतीय संस्कृति पर पाश्चिमी संस्कृति के प्रभाव पर आवाज उठाते है। और दोनों संस्कृतियो की टकराहट को उजागर करते है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(२) निराला का मानना है कि हम सांस्कृतिक दासता को स्वीकार किये हुए हैं। अतः हमें अपनी संस्कृति के प्रति गौरवभावना से युक्त होना चाहिये।

(3) इस कविता मे स्वाधीनता की भावना का पूर्ण प्रस्फुटन हुआ है।

(4) साथ ही तुलसीदास की सामंतविरोधी चेतना को भी उजागर किया गया है।
उदा० जातिवाद का विरोध - शबरी, निषादराज

इस प्रकार निराला ने छायावादी कवि की मान्यता कि वे स्वतंत्रता आंदोलन से तटस्थ थे, को तोड़कर राष्ट्रीय चेतना का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

(ङ) तारसप्तक

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

तारसप्तक का प्रकाशन 1943 में भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा किया गया था। इसमें मुख्यतः सात कवियों की कविताओं को संकलित किया गया है।

तारसप्तक के सात कवि
- गजानन माधव मुक्तिबोध
- नेमीचन्द्र जैन
- भारतभूषण
- प्रभाकर माचवे
- गिरिजाकुमार माथुर
- रामविलास शर्मा
- हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

तारसप्तक का महत्व

(1) यह नई कविता का प्रस्थान बिंदु माना जाता है।

(2) हिंदी काव्य साहित्य में प्रयोगवाद का आरंभ इसी संकलन से माना जाता है।

(3) इन कवियों ने अपने भावनात्मक अनुभवयुक्त कविता लिखी है।

इस प्रकार अज्ञेय द्वारा सम्पादित तारसप्तक, प्रयोगवाद के महान कवियों की जीवन की अनुभूति पर आधारित महान कविताओं का काव्य संग्रह है।

drishti | दृष्टि The Vision

6. (क) गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति-चेतना के संदर्भ में विनयपत्रिका का अनुशीलन कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) घनानंद के काव्य-शिल्प की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) निराला की प्रगति-चेतना पर विचार कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

7. (क) हिंदी की प्रगतिवादी और प्रयोगवादी काव्यधाराओं की तुलना कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) पद्माकर केश्रृंगार-वर्णन पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में निहित 'राष्ट्रीयता की चेतना' पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

8. (क) छायावादी कविता की 'सौंदर्य-चेतना' की उदात्तता पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

छायावादी काव्य का विकास मुख्यत: पाश्चिमी स्वच्छंदतावादी धारा से प्रभावित रहा है।

मुकुटधर पाण्डेय ने छायावादी कविता की पाँच विशेषताएँ दी -

1) सौन्दर्य-चेतना
2) स्वातंत्र्य-चेतना
3) वैयक्तिकता
4) प्रकृति चित्रण
5) विरह-वेदना

सौन्दर्य-चेतना

जीवन के आधारभूत तत्वों सत्यम, शिवम, सुन्दरम को केन्द्र में रखती है।

drishti | दृष्टि The Vision

- सुखात्मक पक्षों के साथ दुखात्मक पक्षों का भी सुंदर चित्रण किया गया है।

मिलन का मत नाम लो, मैं विरह में चिर हूँ।

- प्रकृति की सुन्दरी को नारी की सुन्दरता से भी अधिक महत्व दिया गया

नयनों का नयनों से गोपन प्रिय सम्भाषण, पलकों का नवपलकों पर प्रथमोत्सथान पतन

- प्रकृति का मानवीकरण किया गया। -

उतर रही थी मासमाँ से संध्या सुंदरी धीरे! धीरे! धीरे! धीरे

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

- नारी सौन्दर्य के उपमान उपेक्षा के स्थान पर श्रद्धा पैदा करते हैं।

तुम्हारे छूने मे था प्राण, साथ में पावित्र
गंगा स्नान

- जीवन के प्रत्येक पक्ष की सुन्दरता का वर्णन

सुन्दर हैं सुमन विहग सुन्दर,
मानव तुम सबसे सुन्दरतम

- छायावाद में रीतिकालीन अश्लीलता और नग्नता नहीं अपितु लज्जा, श्रद्धा

तुम कनकवल्लरी में लुकाछिप चलते हो
क्यों
हे लाज भरे सौन्दर्य बता दो मौन बने
रहते हो क्यों

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

- विरह-वेदना मे सुंदर अनुभूति का स्मरण
- कामायनी ~~जैसे~~ महाकाव्य मे नारी की सुन्दरता को सभ्य रूप मे प्रस्तुत किया।

अत: छायावाद मे सौन्दर्य चेतना अनुशासनबद्ध है न कि अश्लीलतापूर्ण। इसलिये छायावाद को स्वच्छंद-चेतना का काव्य कहा जाता है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) मोहन राकेश के नाटक 'आधे-अधूरे' के रचना-वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मोहन राकेश आधुनिककाल के महान अस्तित्ववादी नाटककार है। जिन पर सार्त्र, कीर्केगार्द, कामू का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

उनके महत्वपूर्ण नाटक

(1) आषाढ़ का एक दिन
(2) लहरों के राजहंस
(3) आधे-अधूरे

आधे-अधूरे

रचना वैशिष्ट्य - इसमें सार्त्र के अस्तित्ववादी दर्शन का स्पष्ट प्रभाव

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

-> इसके कथानक में पत्नी-पति के संबंधो का टूटना, मानसिक द्वन्द्व और काम चेतना आदि पर प्रकाश डाला गया

-> सावित्री द्वारा पति से असंतोष के बाद अन्य पुरुषों से सामना होने सभी को अधूरा पाना, नाटक को सारगर्भित करता है।

-> अतः आधे-अधूरे नाटक में यही बताया गया है कोई भी प्राणि संतुष्ट नहीं है सभी आधी-अधूरी जिन्दगी जीने को विवश है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

- मोहन राकेश द्वारा मनोविश्लेषणवाद द्वारा सावित्री के माध्यम से मध्यवर्गीय मानसिकता को दर्शाया गया।

- शहरी यान्त्रिकीपन, पहचान का संकट, संबंधों के टूटन का सुंदर चित्रण।

रंगमंचीयता पर आधारित विशेषता

- पात्रों की संख्या कम
- संवाद योजना उचित
- दृश्यों, अंकों की संख्या कम

इन सभी आधारों पर यह नाटक एक महान यथार्थवादी नाटक है।

(ग) 'प्रगतिशील चेतना' की दृष्टि से 'नाथ-साहित्य' पर विचार करते हुए उसका साहित्यिक महत्त्व बताइए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

नाथ साहित्य, आदिकाल की महान साहित्यिक शाखा है जिस पर शैव धर्म का प्रभाव है।

प्रमुख कवि - गोरखनाथ, मत्स्येन्दरनाथ

प्रगतिशीलता की दृष्टि

(1) नाथ साहित्य में धार्मिक आडम्बरों के विरुद्ध आवाज, जातिवाद का विरोध
(2) प्रवृत्ति मार्ग के स्थान पर निवृत्ति मार्ग का पालन
(3) गुरु का महत्व स्थापित किया
(4) नारी को भोग की वस्तु न मानकर सम्मान का भाव
(5) योग और इन्द्रियों के संयम पर बल -

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

बीलख पातारि आगो नान्हे पीछे सहज अखाड़ा।
ऐसो मन ले जोगी खेले जब अंतरि बर्स भण्डारा।

- गुरु का महत्व

जाणि के अजाणि होय, बात तू ले पछाणि
चेलो को दूजा लाभ होइगा, गुरु होइयो हाणि

- हठयोग का प्रयोग - कर्तिय संयमन हेतु

जोगी सोई जाणिये जग ते रहै उदास
तत निरंजन पाइये कहै मच्छंदर नाथ

इस प्रकार शुक्ल जी द्वारा इन्हें साहित्य में शामिल नहीं किया गया परन्तु हजारी प्रसाद द्विवेदी ने साहित्यिक महत्व के साथ प्रगतिशीलता का आरंभिक बिंदु माना।

drishti | दृष्टि The Vision

Space for Rough Work